International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030; Impact Factor: RJIF 5.24
Received: 15-11-2019; Accepted: 19-12-2019
www.advancedjournal.com
Volume 5; Issue 1; January 2020; Page No. 44-46

शहडोल जिले में माध्यमिक शिक्षा स्तर पर बालिकाओं की सामाजिक परिस्थिति का शैक्षिक अधिगम पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

प्रगति त्रिपाठी
शोधार्थी शिक्षा, श्री सत्य साई यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी एण्ड मेडिकल साइंसेस सिहोर, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश
प्रस्तुत शोध पत्र शहडोल जिले में माध्यमिक शिक्षा स्तर पर बालिकाओं की सामाजिक परिस्थिति का शैक्षिक अधिगम पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन पर आधारित है। सामाजिक परिस्थिति के आधार पर शैक्षिक अधिगम पर प्रभाव का गहन अध्ययन करने के लिए न्यादर्श के रूप में चयनित जिले के सभी विकासखण्डों से 5–5 माध्यमिक विद्यालय कुल 25 विद्यालयों से 40 बालिकाएं कुल 1000 का चयन दैव निदर्शन पद्धति से किया गया है। अनुसंधान के परिणामों से प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर यह ज्ञात हुआ कि शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी बालिकाओं की सामाजिक परिस्थिति का शैक्षिक अधिगम पर पड़ने वाले प्रभाव की औसत उपलब्धि 58.64 तथा मानक विचलन 12.71 है तथा ग्रामीण बालिकाओं का औसत उपलब्धि 55.56 तथा मानक विचलन 13.40 है।

मूल शब्द: शहडोल जिला, माध्यमिक स्तर, बालिकाएँ, सामाजिक परिस्थिति, शैक्षिक उपलब्धि।

1. प्रस्तावना
शिक्षा मनुष्य की आन्तरिक शक्तियों का सर्वांगीण अर्थात् शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा का विकास है। यदि शिक्षा मूल ज्ञान के प्रसार का एक माध्यम है तो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक जीवन के सही मूल्य को पहुंचाने तथा भावी सीढ़ी को चुनौतियों को तैयार करने का साधन है। किसी राष्ट्र का विकास उस राष्ट्र की जनसाधारण की शिक्षा पर निर्भर है। अर्थात् शिक्षा ही राष्ट्र के विकास का प्रमुख आधार है।[1] मनुष्य के शरीर में मन तथा आत्मा में अन्तर निहित शक्तियों का सर्वांगीण प्रकटीकरण ही शिक्षा है।

मोफेट के अनुसार – अधिगम सामग्री हमे ज्ञान देती है। शब्द और वस्तु का संबंधीकरण स्पष्ट और सच्ची सूचना प्रदान करती है। सौन्दर्यात्मक ज्ञान का विकास करती है। प्रसन्नता पूर्वक मनोरंजन करती है।[2] कठिन सत्य को सरल बना कर समझती है कल्पना को उत्तेजित करती है और छात्र की निरीक्षण शक्ति का विकास करती है।

1986 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति में इस बात पर विशेष बल दिया गया है कि महिलाओं को शैक्षिक तथा सामाजिक दृष्टि से समान स्तर पर लाने के लिए विशेष कार्य–कलापों की आवश्यकता है। राष्ट्र निर्माण के कार्य में सुशिक्षित महिलाएँ महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। बालिकाओं की शिक्षा योजना विशेष रूप से तैयार करने की आवश्यकता है और इस कार्य के लिए वित्तीय साधनों की व्यवस्था करनी होगी।

शिक्षा के द्वारा मनुष्य अपनी सभ्यता एवं संस्कृति में निरन्तर विकास करता है। इस विकास के लिए उसकी एक पीढ़ी अपने ज्ञान एवं कला–कौशल आदि को दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित करती है। इस हस्तान्तरण के लिए प्रत्येक समाज विद्यालयी शिक्षा का नियोजन करता है। इसीलिए समय विशेष की विद्यालयी शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यचर्या और शिक्षण विधियाँ सब निश्चित प्रायः होते है। परन्तु जैसे–जैसे समाज में परिवर्तन होते है तैसे–तैसे शिक्षा उन परिवर्तनों को स्वीकार करती हुई आगे बढ़ती है। इस प्रकार उसके उद्देश्य, पाठ्यचर्या और शिक्षण विधियों आदि में आवश्यकतानुसार परिवर्तन होता रहता है।

2. अध्ययन की आवश्यकता
माध्यमिक स्तरीय बालिकाओं की सामाजिक परिस्थिति के आधार पर शैक्षिक अधिगम पर प्रभाव की सफलता के लिए किये जा रहे सभी प्रयासों तथा उक्त सम्बर्ग के बालिकाओं में शैक्षिक अधिगम के सुधार के लिए वास्तविक स्थिति का अध्ययन तथा उसमें वांछित सुधार हेतु सुझाव देने के लिए शैक्षिक शोध करने की आवश्यकता है। शोधार्थी द्वारा चयनित शोध कार्य इस क्षेत्र में पूर्णतः नवीन है जो शिक्षा के क्षेत्र में बहुत ही उपयोगी व महत्वपूर्ण सिद्ध होगा।

3. उद्देश्य
प्रत्येक कार्य का लक्ष्यगत उद्देश्य होता है। उद्देश्य विहीन कार्य लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सकता। किसी शोध समस्या के चयन के पूर्व ही उद्देश्यों का निर्धारण आवश्यक होता है। प्रस्तुत शोध अध्ययन के निम्नवत प्रमुख उद्देश्य हैः

- शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी व ग्रामीण बालिकाओं की सामाजिक परिस्थिति का शैक्षिक अधिगम पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

4. शोध की परिकल्पनाएँ
'प्रयोग से प्राप्त परिणाम तथा परिकल्पना से निर्दृष्ट परिणाम मे कोई अंतर नही है।'' उक्त कथन से आशय यह है कि शोधार्थी शोध कार्य के पूर्व परिकल्पनाएँ निर्मित करता है, ये परिकल्पनाएँ ही सम्भावित निष्कर्ष होती है, इसे ही परिकल्पना से निर्दृष्ट परिणाम कहते है।

शोधार्थी द्वारा आँकड़ों के संकलन के पश्चात विश्लेषण द्वारा प्राप्त निष्कर्ष ही प्रयोग से प्राप्त परिणाम है।

इस प्रकार अनुसंधानकर्ता द्वारा शोध कार्य के पूर्व की गयी परिकल्पना अर्थात संभावित निष्कर्ष व शोध कार्य पश्चात प्राप्त निष्कर्ष मे जब कोई अंतर नहीं होता तब उसे शून्य परिकल्पना कहते है।

उक्त परिभाषा के अनुसार परिकल्पना सत्यापित होती है तो वह शून्य परिकल्पना कहलाती है।

शोधार्थी की मान्यता है कि इस अध्ययन के पश्चात् निम्नवत तथ्य प्राप्त होगे–

1. शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी व ग्रामीण बालिकाओं की सामाजिक परिस्थिति का शैक्षिक अधिगम पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नही है।

5. शोध समस्या का सीमांकन
शोध कार्य का क्षेत्र जिला शहडोल है। इसके अन्तर्गत 5 विकासखण्ड – सोहागपुर, गोहपारू, ब्यौहारी, बुढ़ार एवं जयसिंहनगर हैं। अतः जिला अन्तर्गत स्थित माध्यमिक स्तरीय बालिकाओं की सामाजिक परिस्थिति के आधार पर शैक्षिक अधिगम पर प्रभाव, इस अध्ययन के अन्तर्गत सम्मिलित होगें।

समष्टि व प्रतिदर्श
चूंकि शहडोल जिला का क्षेत्र व्यापक है, सभी माध्यमिक स्तर के विद्यालयों का अध्ययन करना संभव नहीं है, इसलिए जिले के सभी विकासखण्डों से 5–5 माध्यमिक विद्यालय कुल 25 विद्यालयों का चयन दैव निदर्शन द्वारा अध्ययन हेतु किया गया है। विद्यालयों का चयन करते समय यह विशेष रूप से ध्यान रखा गया कि सभी विकासखण्डों के माध्यमिक विद्यालय ऐसे हो जो अपने–अपने क्षेत्र का प्रतिनिधित्व कर सके तथा ये सभी विद्यालय शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों से संबंधित हो।

सामाजिक परिस्थिति के आधार पर शैक्षिक अधिगम पर प्रभाव का गहन अध्ययन करने के लिए न्यादर्श के रूप में चयनित विद्यालयों से 40 छात्राएं कुल 1000 का चयन दैव निदर्शन पद्धति से किया गया है। इस प्रकार यह अध्ययन दोनों दृि टयों से सैद्धान्तिक एवं अनुभवाश्रित परिपूर्ण होगा।

6. अध्ययन विधि

- **सर्वेक्षण अध्ययन विधिः** सर्वेक्षण अनुसंधान का एक महत्वपूर्ण अंग है। इसके द्वारा शोध समस्या के विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित आंकड़ों का संग्रहण किया जाता है। आंकड़े मुख्य तथा वर्तमान स्तर का निर्धारण, वर्तमान स्तर की मान्य स्तर से तुलना, तथा वर्तमान स्तर को विकसित करने में महत्वपूर्ण उपादान होते हैं। सर्वेक्षण में व्यक्ति की अपेक्षा तथ्यों, परिस्थितियों तथा गणनाओं को प्राथमिकता दी जाती है।
- **साख्यिकीय विधि**ः सर्वेंक्षण विधि से प्राप्त ऑकड़ो का वर्गीकरण एवं सारणीयन किया गया है। जिनकी व्याख्या एवं विश्लेषण हेतु, सांख्यकीय विधियॉ प्रयोग में लाई गयी है। प्रस्तुत शोधकार्य में परिकल्पनाओं का परीक्षण सांख्यकीय विधियों द्वारा करने के लिये– डमंदए प्रतिशत ;ःद्धए ैण्क्ण्ए जश ज्मेज आदि प्रयोग किये गये है, साथ ही गुणात्मक विश्लेषण पर भी ध्यान रखा गया हैं।

7. शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध में स्वनिर्मित बालिकाओं की सामाजिक परिस्थिति का शैक्षिक अधिगम पर पड़ने वाले प्रभाव की सार्थकता हेतु परीक्षण पत्रक/ कक्षा 10 वीं गणित का परीक्षण किया गया है।

8. पूर्व अध्ययन समीक्षा

पूर्ववर्ती अध्ययन से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सबन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोशों, पत्र–पत्रिकाओं, शोध पत्रों तथा अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निमार्ण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने तथा कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है इनमें से मुख्य रूप से अग्रवाल, रीना (2007)[3], गुप्ता एस.पी. (2001)[4], कुर, सुखपाल, (2008)[5], निगम, बी.के. तथा शर्मा, एस.आर. (1993)[6] त्रिपाठी, मनीष कुमार एवं डॉ. जय सिंह (2016)[7] श्रीवास्तव तथा डॉ. छाया एवं डॉ. जय सिंह (2016)[8] ने शोध विधि एवं बालिकाओं की सामाजिक परिस्थिति का शैक्षिक अधिगम पर पड़ने वाले प्रभाव से सम्बन्धित कार्य किये है।

9. शहडोल जिले का सामान्य परिचय

शहडोल जिला भारत वर्ष के हृदय स्थल मध्य प्रदेश के उत्तर–पूर्वी भाग में $22^{0}38'$ उत्तरी अक्षांश से $24^{0}20'$ उत्तरी अक्षांश एवं $30^{0}28'$ पूर्वी देशांतर से $82^{0}12'$ पूर्वी देशांतर के मध्य स्थित है। शहडोल जिले का नाम सोहागपुर गॉव के शहडोलवा अहिर के नाम पर आधारित है। शहडोल जिले का कुल क्षेत्रफल 5671 वर्ग कि.मी. है। इस जिले की उत्तर से दक्षिण की अधिकमतम लम्बाई 170 कि.मी. तथा पूर्व से पश्चिम की अधिकतम लम्बाई 110 कि.मी. है। प्रशासकीय दृष्टि से शहडोल जिले में चार तहसीलें–सोहागपुर, जैतपुर, ब्यौहारी, एवं जयसिंह नगर हैं। तथा पॉच विकासखण्ड–सोहागपुर, पाली, ब्यौहारी, बुढ़ार एवं जयसिंह नगर हैं।

10. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

परिकल्पना क्र. 1ः "शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी व ग्रामीण बालिकाओं की सामाजिक परिस्थिति का शैक्षिक अधिगम पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नही है।"

सारणी क्रमांक 1ः शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी व ग्रामीण बालिकाओं की सामाजिक परिस्थिति का शैक्षिक अधिगम पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

क्र.	प्राप्तांक की स्थिति	बालिकाओं की सामाजिक परिस्थिति का शैक्षिक अधिगम पर पड़ने वाले प्रभाव			
		शहरी विद्यालयों के बालिकाएँ		ग्रामीण विद्यालयों के बालिकाएँ	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	0 से ऊपर किन्तु 40 अंक से कम (शैक्षिक अधिगम की प्राप्ति नहीं)	26	5॰20	66	13॰20
2.	40 अंक से अधिक किन्तु 60 अंक से कम (शैक्षिक अधिगम की प्राप्ति)	280	56॰00	278	55॰60
3.	60 अंक से अधिक किन्तु 80 अंक से कम (शैक्षिक अधिगम की ओर अग्रसर)	162	32॰40	134	26॰80
4.	80 अंक से अधिक किन्तु 100 अंक से कम (शैक्षिक अधिगम की ओर पूर्णरूप से अग्रसर)	32	6॰40	22	4॰40

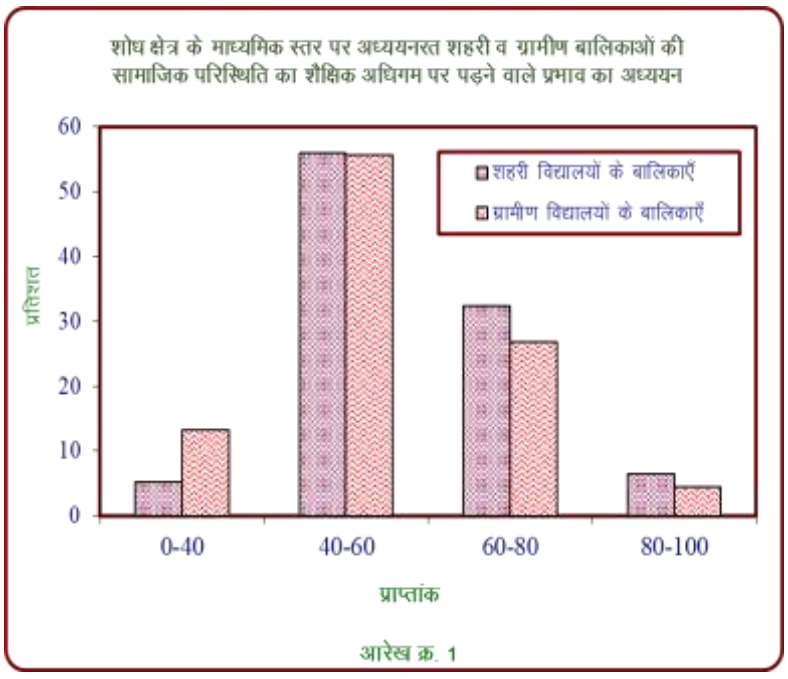

आरेख क्र. 1

विश्लेषण एवं व्याख्या

उपरोक्त तालिका क्रमांक – 1 से न्यादर्श हेतु चयनित माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत 500 शहरी एवं 500 ग्रामीण बालिकाओं की सामाजिक परिस्थिति का शैक्षिक अधिगम पर पड़ने वाले प्रभाव सम्बंधी जानकारी का संकलन किया गया है। उपरोक्त सारणी क्रमांक – 1 के ऑकड़े दर्शाते है, कि शोध क्षेत्र में न्यादर्श हेतु चयनित कुल 500 शहरी बालिकाओं में से 26 शैक्षिक अधिगम की प्राप्ति नही की, जबकि 280 बालिकाओं ने शैक्षिक अधिगम की प्राप्ति कर ली है तथा 162 बालिकाओं ने शैक्षिक अधिगम की ओर अग्रसर है एवं 32 बालिकाओं ने शैक्षिक अधिगम की ओर पूर्णरूप से अग्रसर है।

इसी प्रकार शोध क्षेत्र में न्यादर्श हेतु चयनित कुल 500 ग्रामीण क्षेत्र के बालिकाओं में से 66 बालिकाओं ने शैक्षिक अधिगम की प्राप्ति नही की, जबकि 278 बालिकाओं ने शैक्षिक अधिगम के प्रभाव की प्राप्ति कर ली है तथा 134 शैक्षिक अधिगम के प्रभाव की ओर अग्रसर है एवं 22 बालिकाओं ने शैक्षिक अधिगम की ओर पूर्णरूप से अग्रसर है।

इस प्रकार इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है, कि शोध क्षेत्र में न्यादर्श हेतु चयनित कुल 500 शहरी क्षेत्र के बालिकाओं में से 5.20 बालिकाओं ने अधिगम प्रभाव की प्राप्ति नही की, जबकि 56.00 बालिकाओं ने शैक्षिक अधिगम की प्राप्ति कर ली है तथा 32.40 बालिकाओं ने शैक्षिक अधिगम की ओर अग्रसर है एवं 6.40 बालिकाओं ने शैक्षिक अधिगम की ओर पूर्णरूप से अग्रसर है।

शोध क्षेत्र में न्यादर्श हेतु चयनित कुल 500 ग्रामीण क्षेत्र के बालिकाओं में से 13.20 बालिकाओं ने शैक्षिक अधिगम प्रभाव की प्राप्ति नही की, जबकि 55.60 बालिकाओं ने शैक्षिक अधिगम के प्रभाव की प्राप्ति कर ली है तथा 26.80 बालिकाओं ने शैक्षिक अधिगम प्रभाव की ओर अग्रसर है एवं 4.40 बालिकाओं ने शैक्षिक अधिगम के प्रभाव की ओर पूर्णरूप से अग्रसर है।

सारणी क्र. 2: शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी व ग्रामीण बालिकाओं की सामाजिक परिस्थिति का शैक्षिक अधिगम पर पड़ने वाले प्रभाव का सांख्यिकीय विश्लेषण

समूह		शहरी क्षेत्र की बालिकाएँ	ग्रामीण क्षेत्र के बालिकाएँ
समूह की संख्या (N)		500	500
मध्यमान (M)		58.64	55.56
मानक विचलन (D)		12.71	13.40
क्रान्तिक निष्पत्ति (C.R.)		3.73	
निष्कर्ष	0.05 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर है	
	0.01 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर है	

विश्लेषण एवं व्याख्या

उपर्युक्त सारणी में शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी बालिकाओं की सामाजिक परिस्थिति का शैक्षिक अधिगम पर पड़ने वाले प्रभाव की औसत उपलब्धि 58. 64 तथा मानक विचलन 12.71 है तथा ग्रामीण छात्राओं का औसत उपलब्धि 55.56 तथा मानक विचलन 13.40 है। दोनों समूहों के मध्यमानों में पाये जाने वाले सार्थकता की जाँच के लिए क्रान्तिक अनुपात परीक्षण (ब्त्ण् ज्मेज) किया गया, जिसमें ब् का मान 3.73 प्राप्त हुआ जो 0.05 सार्थकता स्तर के मान 1.97 तथा 0.01 सार्थकता स्तर के मान 2.59 से अधिक है। अतः शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी बालिकाओं की सामाजिक परिस्थिति का शैक्षिक अधिगम पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अन्तर पाया गया। इस प्रकार शोधार्थी की परिकल्पना "शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी व ग्रामीण बालिकाओं की सामाजिक परिस्थिति का शैक्षिक अधिगम पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नही है।" अस्वीकार की जाती है।

अतः परिकल्पना निरसित होती है।

निष्कर्ष

किसी भी शोध कार्य से प्राप्त निष्कर्ष किये गये शोध कार्य को मान्यता प्रदान करते है। प्रस्तुत शोध के प्रदत्तों के सांख्यिकीय विश्लेषण एवं परिकल्पनाओं के परीक्षण से प्राप्त हुए तथ्यों के आधार पर प्राप्त शोध निष्कर्षो का विवरण निम्ननुसार हैं–

1. शोध क्षेत्र में न्यादर्श हेतु चयनित कुल 500 शहरी क्षेत्र के बालिकाओं में से 5.20 बालिकाओं ने अधिगम प्रभाव की प्राप्ति नही की, जबकि 56.00 बालिकाओं ने शैक्षिक अधिगम की प्राप्ति कर ली है तथा 32.40 बालिकाओं ने शैक्षिक अधिगम की ओर अग्रसर है एवं 6.40 बालिकाओं ने शैक्षिक अधिगम की ओर पूर्णरूप से अग्रसर है।
2. शोध क्षेत्र में न्यादर्श हेतु चयनित कुल 500 ग्रामीण क्षेत्र के बालिकाओं में से 13. 20 बालिकाओं ने शैक्षिक अधिगम प्रभाव की प्राप्ति नही की, जबकि 55.60 बालिकाओं ने शैक्षिक अधिगम के प्रभाव की प्राप्ति कर ली है तथा 26.80 बालिकाओं ने शैक्षिक अधिगम प्रभाव की ओर अग्रसर है एवं 4.40 बालिकाओं ने शैक्षिक अधिगम के प्रभाव की ओर पूर्णरूप से अग्रसर है।
3. शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी बालिकाओं की सामाजिक परिस्थिति का शैक्षिक अधिगम पर पड़ने वाले प्रभाव की औसत उपलब्धि 58.64 तथा मानक विचलन 12.71 है तथा ग्रामीण छात्राओं का औसत उपलब्धि 55.56 तथा मानक विचलन 13.40 है।

सन्दर्भ सूची

1. शर्मा आर.सी. शिक्षा प्रशासन, केन्द्रीय विद्यालय संगठन देलही 1970, पृष्ठ 20.
2. शिक्षा के सामान्य सिद्धांत, पाठक एवं त्यागी विनोद पुस्तक मंदिर आगरा, नवीनतम संस्करण, पृष्ठ 5
3. अग्रवाल, रीना – परिषदीय प्राथमिक विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक सम्प्राप्ति : एक अवलोकन, भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, 2007, वर्ष 26, अंक 21.
4. गुप्ता एस.पी. – ''आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन'' शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद संस्करण, 2001.
5. कुर, सुखपाल, 2008, ''ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत बालिकाओं का सामाजिक आर्थिक स्तर पारिवारिक तथा उनकी शिक्षा के प्रति महिला जनप्रतिनिधियों की आकांक्षा एवं अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन'', महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर।
6. निगम, बी.के. तथा शर्मा, एस.आर. –''भारतीय शिक्षा का इतिहास एवं समस्यायें'' (प्रथम संस्करण) कनिष्ठ प्रकाशन, नई दिल्ली, 1993.
7. त्रिपाठी, मनीष कुमार एवं डॉ. जय सिंह (2016) "रीवा संभाग में हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन" International Journal of Multidisciplinary Education and Research, Volume 1; Issue 9; November 2016; Page No. 05-07.
8. श्रीवास्तव, डॉ. छाया एवं डॉ. जय सिंह (2016) – "माध्यमिक शिक्षा स्तर पर कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण अधिगम क्षमता का अध्ययन (सतना जिले के सन्दर्भ में)Þ International Journal of Multidisciplinary Education and Research, Volume 1; Issue 3; May 2016; Page No. 63-65.